

中国理学大辞典

张岱年题



董玉整 主编

暨南大学出版社



B 244
3

97307

DF62/12
中国理学大辞典

董玉整 主编



暨南大学出版社

图书在版编目(CIP)数据

中国理学大辞典/董玉整主编. —广州:
暨南大学出版社, 1996. 10
ISBN 7—81029—397—4

I. 中...

II. 董...

III. 中国哲学—宋明理学—辞典

IV. B244

暨南大学出版社出版

暨南大学印刷厂印刷

新华书店经销

开本: 850×1168 1/32 印张: 22.625 字数: 81 万

1995 年 12 月第 1 版 1996 年 10 月第 1 次印刷

印数: 1—5000 册

定价: 精装 68.00 元
平装 54.00 元

中国理学大辞典

顾问 张岱年

主编 董玉整

编委 (以姓氏笔画为序)

马小林	李霞	陶清	董莉
董玉整	程潮		

作者 (以姓氏笔画为序)

马小林	马钦忠	李霞	余志新
邹林	汪高鑫	张静蓉	周晓光
郝延红	陶清	董莉	董玉整
程潮	程梅花	鲁茂松	

凡 例

- 一、本辞典内容上起北宋，下至清朝，跨 10 个世纪。收条目共七类 1174 个，其中，人物 571 位，著作 213 部，命题 147 种，概念 59 个（组），学派 97 个，典故 48 个，遗迹 39 处。
- 二、人物条包括人物姓名、生卒年代、字号、籍贯、主要履历、学术贡献、历史地位、主要著作等。
- 三、著作条包括著作名称、别称、著作者、卷数、主要理论观点与学术价值、版本情况等。
- 四、命题条包括命题、命题者、命题的涵义与影响等。
- 五、概念条包括概念、概念提出者、概念的内涵、概念的意义等。
- 六、学派条包括学派名称、学派代表人物、学派主要观点和思想、主要著作、学派的历史发展和历史地位等。
- 七、典故条包括典故名称、典故的由来、典故的价值等。
- 八、遗迹条包括遗迹名称、遗迹的历史演变和历史地位等。
- 九、本辞典以辞条的笔画顺序排列，分类笔画索引附于正文之后。

序

北京大学教授 张岱年

理学亦称道学，是宋元明清时代占统治地位的哲学思想，创始于周敦颐、张载、程颢及程颐。北宋中期，张载讲学于关中，二程讲学于洛阳，都提出了自己的理论体系，发生了较大的影响。二程早年曾受学于周敦颐，后人追溯程学的来源，于是推崇周敦颐为理学的开创者。周、张、二程都以继承孔孟学说为己任。周敦颐论学云：“圣人之道，入乎耳，存乎心，蕴之为德行，行之谓事业。”“道德高厚，教化无穷，实与天地参而四时同，其惟孔子乎！”张载自述为学要旨云：“为天地立心，为生民立命，为往圣继绝学，为万世开太平。”程颐述其兄程颢的学术云：“知尽性至命必本于孝悌，穷神知化由通于礼乐；辨异端似是之非，开百代未明之惑。”这些论学之语，都揭示了理学的宗旨。理学一方面批判了释（佛教）老（道家）学说，一方面也反对汉唐训诂之学，而以《论语》、《周易》、《中庸》、《孟子》等古代儒家经典为依据，回答了释老所提出的问题，使儒学达到了更高的理论水平。

理学家吸取了佛学和道家的一些思想资料，但其基本精神是回到孔孟，为孔孟的伦理学说提供了本体论的基础。理学虽受到佛老的影响，而其根本宗旨与佛老不同。一些佞佛之士认为理学家是“阳儒阴释”，是不符合实际的。理学是以对佛老的批判为基础的儒学，并形成了儒学的新形态。

《宋史》立“道学传”，但道学一词易与“道家之学”相混，

仍以理学的名称为宜。理学受到尊崇之后，出现了一些言行不一致的假道学，于是理学为一些人所诟病。其实真正的理学家都是特重道德履践的，虽然未免迂阔而决非诈伪。宋元明清时代，有些理学家出任地方官吏，也都是清官，这是明显的历史事实。

理学被明清最高统治者所利用，作为维护专制制度的工具，其实多数理学家并不赞同绝对王权。理学确实起了维护社会秩序的作用，于是有人认为理学是反动思潮，事实上理学是与当时社会的生产关系相适应的，当时并未产生新的生产关系，所以说理学是反动的。只有明代后期产生了资本主义生产关系的萌芽，理学才逐渐转为过时的了。

也有些论者认为理学是唯心主义的理论形态。这也不符合历史事实。理学之中，程（颐）朱（熹）学派宣扬唯理论，可以说是一种客观唯心主义；陆（九渊）王（守仁）学派宣扬唯心论，可以说是一种主观唯心主义；但张载及其继承者王廷相、王夫之以“气”说明世界，乃是唯物主义哲学。应该承认，理学包括三派，其中唯物主义一派构成了近古时代的具有一定科学性的进步思想的传统。

理学在历史上曾起过重要作用，并且广泛流传到东亚地区，成为近古时代东亚地区占统治地位的思想体系，所以是值得着重研究的。理学的许多概念范畴更需要正确理解。董玉整同志联合十几位青年学者编写《中国理学大辞典》，对于理学的人物、著作、命题、概念、学派、典故、遗迹等门类的词目都作了诠释，这是一项有重要意义的工作，对于中国传统文化的批判继承将有重大的帮助。董玉整同志征求我的意见，于是略述理学的历史意义作为序言。

目 录

凡例.....	[1]
序	张岱年 [1]
笔画索引.....	[1]
正文.....	[1]
分类索引.....	[665]
后记.....	[691]

笔画索引

一画

- 一物两体 (1)
 一而二,二而一 (2)
 一草一木亦皆有理 (3)
 一物之理,即万物之理 (3)

二画

- 二孟 (4)
 二程 (4)
 《二曲集》 (4)
 《二程集》 (4)
 《二程全书》 (5)
 十六字心传 (5)
 丁晏 (6)
 丁希亮 (6)
 人心 (6)
 人欲 (7)
 人与天地一本 (8)
 人欲中自有天理 (8)
 人心之灵,莫不有知 (8)
 人欲之本,即是天理 (9)
 人欲正当处,即天理也 (9)
 人性无不善,于扩充尽才
 后见之 (10)

- 九峰学派 (11)
 刁包 (11)

三画

- 《三礼订讹》 (13)
 三原学派 (13)
 《大学问》 (13)
 《大学辨》 (14)
 《大学衍义》 (15)
 《大学辨业》 (15)
 万斯大 (15)
 万斯同 (16)
 万化一心 (17)
 万物唯心 (17)
 万事万物莫非心 (17)
 上蔡学派 (18)
 《上蔡语录》 (19)
 《山房集》 (20)
 义利之辨 (20)
 义理之性与气质之性 (21)
 广平书院 (23)
 广平学派 (23)
 《广平类稿》 (25)
 己易 (25)

- | | |
|------------------------|--------------------------------|
| 己便是尺度, 尺度便是己…………… (25) | 天下之物, 莫不有理 …… (40) |
| 弓矢从的…………… (26) | 天理人欲, 同体异用 …… (40) |
| 小心…………… (27) | 天人本无二, 不必言合 …… (41) |
| 《小学》…………… (27) | 天地万物之理, 无独必
有对…………… (42) |
| 《小心斋札记》…………… (27) | 天理与心、性、天命, 同
体异取…………… (43) |
| 习心…………… (28) | 不疑乎心, 不戾乎圣人 …… (44) |
| 习行…………… (28) | 不归本于孔圣之道者, 则
异端邪说…………… (44) |
| 《习学记言》…………… (28) | 王万…………… (45) |
| 马理…………… (29) | 王介…………… (45) |
| 马翺飞…………… (29) | 王艮…………… (45) |

四画

- | | |
|------------------|---------------|
| 元晦…………… (31) | 王学…………… (47) |
| 元明善…………… (31) | 王炎…………… (47) |
| 无对…………… (31) | 王桢…………… (47) |
| 无极…………… (32) | 王柏…………… (48) |
| 无思…………… (33) | 王恕…………… (48) |
| 《无何集》…………… (33) | 王雱…………… (49) |
| 无理胜理…………… (33) | 王植…………… (49) |
| 无极而太极…………… (34) | 王道…………… (49) |
| 无极太极之辨…………… (34) | 王源…………… (50) |
| 天理…………… (35) | 王畿…………… (51) |
| 天人一理…………… (36) | 王震…………… (52) |
| 天地之心…………… (36) | 王士穀…………… (52) |
| 天地正气…………… (37) | 王之士…………… (52) |
| 天泉证道…………… (37) | 王大受…………… (53) |
| 天者, 理也…………… (38) | 王夫之…………… (53) |
| 天下第一教官…………… (39) | 王心敬…………… (54) |
| 天地自然之道…………… (39) | 王自中…………… (54) |

- | | | | |
|---------------|------|----------------|------|
| 王守仁····· | (55) | 太虚····· | (77) |
| 王安石····· | (57) | 太虚本动····· | (78) |
| 王安礼····· | (59) | 太虚即气····· | (78) |
| 王安国····· | (59) | 尤时熙····· | (78) |
| 王廷相····· | (59) | 历仲方····· | (79) |
| 王时敏····· | (61) | 巨儒鸿士者,经邦弘化, | |
| 王时槐····· | (61) | 康济艰难者也····· | (79) |
| 王应凤····· | (62) | 《止斋集》····· | (80) |
| 王应麟····· | (63) | 中无定体····· | (80) |
| 王弘撰····· | (63) | 中国理学····· | (81) |
| 王昌世····· | (64) | 内心与外心····· | (81) |
| 王炎午····· | (64) | 见闻之知与德性所知····· | (81) |
| 王厚孙····· | (65) | 《日知录》····· | (82) |
| 王象祖····· | (65) | 仁即是觉····· | (83) |
| 王鸿儒····· | (65) | 仁者,浑然与物同体····· | (83) |
| 王懋竑····· | (66) | 化待、平待、统待····· | (84) |
| 王学七派····· | (66) | 从静坐中养出端倪来····· | (85) |
| 《王学质疑》····· | (67) | 气····· | (85) |
| 王霸之辩····· | (67) | 气化····· | (86) |
| 王门四句教····· | (68) | 气本论····· | (87) |
| 《王文成公全书》····· | (69) | 气无终尽····· | (88) |
| 王霸义利之辩····· | (69) | 气有偏盛····· | (89) |
| 《五经大全》····· | (70) | 气是本体····· | (89) |
| 《五经纂言》····· | (70) | 气种有定····· | (90) |
| 《五峰集》····· | (70) | 气为天地万物之祖····· | (90) |
| 五峰学派····· | (71) | 毛奇龄····· | (91) |
| 韦斋井····· | (73) | 反求吾心····· | (92) |
| 太极····· | (73) | 反求诸心····· | (92) |
| 太极即气····· | (74) | 乌冲····· | (93) |
| 《太极图说》····· | (75) | 乌本良····· | (93) |
| 太和····· | (76) | 乌斯道····· | (93) |

- | | |
|--------------------------------|---------------------|
| 六经皆史····· (94) | 心之精神是谓圣····· (112) |
| 六经皆我注脚····· (95) | 心生天,生命也····· (113) |
| 《文山集》····· (95) | 邓剡····· (114) |
| 文天祥····· (96) | 邓以赞····· (114) |
| 文成之良知,紫阳之格
物,原非有异····· (97) | 孔元忠····· (115) |
| 方凤····· (98) | 尹焞····· (115) |
| 方迈····· (98) | 《水心集》····· (116) |
| 方苞····· (99) | 水心学派····· (116) |
| 方桐····· (99) | 《书集传》····· (119) |
| 方以智····· (99) | |
| 方东树····· (101) | |
| 方孝儒····· (102) | |
| 方宗诚····· (102) | |
| 方学渐····· (103) | |
| 火····· (103) | |
| 为学当有实功,有实用····· (104) | |
| 心····· (105) | |
| 心学····· (106) | |
| 心本论····· (107) | |
| 心即理····· (107) | |
| 心性图····· (107) | |
| 心与理一····· (108) | |
| 心无本体····· (108) | |
| 心外无理····· (109) | |
| 心外无物····· (109) | |
| 心即性也····· (110) | |
| 心犹印板····· (111) | |
| 心统性情····· (111) | |
| 心为人之本····· (112) | |
| 心者所以治事····· (112) | |
| | 五画 |
| | 《正蒙》····· (120) |
| | 正躬行····· (121) |
| | 《正蒙初义》····· (121) |
| | 《正谊堂全书》····· (122) |
| | 《玉海》····· (122) |
| | 《古今纪要》····· (122) |
| | 本心····· (122) |
| | 《本堂集》····· (123) |
| | 龙川学派····· (124) |
| | 甘泉学派····· (124) |
| | 《甘泉先生文集》····· (125) |
| | 《东西均》····· (126) |
| | 《东莱集》····· (126) |
| | 《东岩集》····· (127) |
| | 东山精舍····· (127) |
| | 东发学派····· (127) |
| | 东林书院····· (129) |
| | 东南邹鲁····· (130) |
| | 东南三贤····· (130) |

- | | | | |
|----------------|-------|----------------|-------|
| 《老子注》 | (167) | 先天学 | (185) |
| 考亭书院 | (167) | 先立乎其大者 | (186) |
| 考亭学派 | (167) | 乔行简 | (187) |
| 《西铭》 | (170) | 朱松 | (187) |
| 西山书院 | (170) | 朱珪 | (188) |
| 西山学派 | (171) | 朱恕 | (188) |
| 西山真氏学派 | (171) | 朱震 | (188) |
| 西山蔡氏学派 | (171) | 朱熹 | (189) |
| 成孺 | (171) | 朱之瑜 | (192) |
| 成德为行 | (172) | 朱子学 | (193) |
| 存天理, 灭人欲 | (172) | 朱文炆 | (193) |
| 百源学派 | (173) | 朱用纯 | (194) |
| 百姓日用即道 | (174) | 朱次琦 | (194) |
| 当 | (175) | 朱泽沅 | (195) |
| 师古而实自用 | (175) | 朱得之 | (195) |
| 吕怀 | (176) | 《朱子大全》 | (195) |
| 吕坤 | (176) | 《朱子全书》 | (195) |
| 吕学 | (177) | 《朱子语类》 | (196) |
| 吕枬 | (178) | 《朱子遗书》 | (196) |
| 吕潜 | (178) | 朱陆之争 | (197) |
| 吕大忠 | (179) | 朱陆异同 | (198) |
| 吕大钧 | (179) | 《朱舜水集》 | (199) |
| 吕大临 | (180) | 朱熹省墓 | (200) |
| 吕本中 | (181) | 《朱文公文集》 | (200) |
| 吕祖俭 | (182) | 《朱子晚年定论》 | (200) |
| 吕祖泰 | (182) | 朱熹坐沙画卦处 | (201) |
| 吕祖谦 | (182) | 《传习录》 | (201) |
| 吕留良 | (184) | 优游读书 | (202) |
| 吕惠卿 | (184) | 任自然、夺自然 | (202) |
| 同恕 | (185) | 伊川学派 | (203) |
| 竹洲书院 | (185) | 《伊川击壤集》 | (205) |

- | | | | |
|---------------|-------|--------------|-------|
| 《伊洛渊源录》 | (205) | 刘清之 | (219) |
| 华允成 | (206) | 刘靖之 | (220) |
| 巩丰 | (206) | 刘源禄 | (221) |
| 巩嵘 | (206) | 刘熙载 | (221) |
| 《延平答问》 | (206) | 《刘子全书》 | (222) |
| 自新 | (207) | 《刘左史集》 | (222) |
| 自无极而为太极 | (207) | 交、轮、几 | (223) |
| 行可兼知,而知不可 | | 庆元学禁 | (223) |
| 兼行 | (208) | 《问辨录》 | (224) |
| 行足以兼知,未有能 | | 江永 | (224) |
| 行而不知者 | (208) | 江润身 | (225) |
| 全祖望 | (209) | 江门心学 | (225) |
| 会 | (210) | 江东四先生 | (225) |
| 刘因 | (210) | 汤中 | (225) |
| 刘洵 | (211) | 汤千 | (226) |
| 刘阳 | (211) | 汤中 | (226) |
| 刘轮 | (211) | 汤汉 | (226) |
| 刘恕 | (212) | 汤斌 | (227) |
| 刘基 | (212) | 汤之铸 | (228) |
| 刘埙 | (213) | 《汤子遗书》 | (228) |
| 刘子翬 | (213) | 宇文绍节 | (229) |
| 刘元珍 | (213) | 宇宙便是吾心,吾心 | |
| 刘文敏 | (214) | 即是宇宙 | (229) |
| 刘邦采 | (214) | 守四事去十害 | (229) |
| 刘永澄 | (215) | 安熙 | (230) |
| 刘安上 | (215) | 安身立本 | (230) |
| 刘安节 | (216) | 关学 | (230) |
| 刘辰翁 | (217) | 关中学派 | (230) |
| 刘君举 | (217) | 讲习 | (231) |
| 刘宗周 | (217) | 许谦 | (231) |
| 刘勉之 | (219) | 许鼎 | (231) |

- | | | | |
|--------------|-------|------------|-------|
| 许衡 | (232) | 丽泽书院 | (249) |
| 许月卿 | (233) | 芮长恤 | (250) |
| 许世卿 | (234) | 苏昞 | (250) |
| 许孚远 | (234) | 苏天爵 | (251) |
| 许景衡 | (234) | 苏源生 | (251) |
| 《论语说》 | (235) | 劳史 | (251) |
| 《论语学案》 | (235) | 赤子之心 | (251) |
| “论衡”之教兴, 圣人 | | 李中 | (252) |
| 之道明 | (236) | 李存 | (253) |
| 阳明洞 | (236) | 李材 | (253) |
| 阳明学派 | (237) | 李郁 | (254) |
| 好恶为性 | (238) | 李侗 | (254) |
| 牟子才 | (239) | 李绂 | (255) |
| 孙复 | (239) | 李柏 | (256) |
| 孙奇逢 | (240) | 李挺 | (256) |
| 孙景烈 | (242) | 李复 | (256) |
| 孙慎行 | (242) | 李贽 | (257) |
| | | 李涛 | (258) |
| | | 李堪 | (259) |
| | | 李楠 | (260) |
| | | 李颙 | (260) |
| | | 李缙 | (262) |
| | | 李翱 | (262) |
| | | 李大有 | (263) |
| | | 李元白 | (263) |
| | | 李元春 | (263) |
| | | 李文炤 | (264) |
| | | 李光地 | (264) |
| | | 李光坡 | (266) |
| | | 李因笃 | (266) |
| | | 李来章 | (266) |
-
- 七画
- | | |
|--------------|-------|
| 杜洲书院 | (244) |
| 杨时 | (244) |
| 杨简 | (245) |
| 杨爵 | (246) |
| 杨万里 | (246) |
| 杨东明 | (247) |
| 杨时乔 | (247) |
| 杨应诏 | (248) |
| 杨起元 | (248) |
| 杨豫孙 | (249) |
| 《杨氏易传》 | (249) |

李坤臣	(267)	《何心隐集》	(281)
李承箕	(267)	《近思录》	(281)
时少章	(267)	《近溪子文集》	(282)
吴当	(268)	余祐	(282)
吴泳	(268)	余煥文	(282)
吴璜	(269)	余干学派	(283)
吴莱	(269)	邹智	(284)
吴浩	(270)	邹元标	(284)
吴翌	(270)	邹守益	(285)
吴澄	(270)	《龟山集》	(286)
吴与弼	(271)	龟山学派	(287)
吴子良	(271)	应儼	(288)
吴廷翰	(272)	应伪谦	(289)
吴表臣	(274)	《闲闲录》	(289)
吴定翁	(274)	汪佑	(289)
吴思齐	(275)	汪绶	(290)
吴钟峦	(275)	汪穀	(290)
吴锡畴	(275)	汪克宽	(291)
吴嘉宾	(275)	汪炎昶	(291)
吴霞举	(276)	汪桂月	(292)
岑士贵	(276)	沈昀	(292)
《困知记》	(276)	沈佳	(292)
《困辨录》	(277)	沈衍	(293)
《困学纪闻》	(277)	沈炳	(293)
体用一源, 显微无间	(277)	沈煥	(293)
何迁	(279)	沈大廉	(294)
何祥	(279)	沈国模	(294)
何基	(279)	沈躬行	(294)
何塘	(280)	宋学	(294)
何大猷	(280)	宋駒	(295)
何心隐	(280)	宋濂	(295)